14 हिमशुक

बहुत समय पहले अवध में एक राजा राज्य करता था। उसके तीन लड़के थे। तीनों बहुत पढ़े-लिखे, बुद्धिमान और गुणी थे।

एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को परीक्षा लेने के लिए बुलाया। वह जानना चाहता था कि किसी दोषी को सज़ा देने के मामले में उन तीनों के क्या विचार हैं।

"मान लो," उसने कहा, " अगर मैं अपने जीवन और सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

सबसे बड़े लड़के ने कहा, "ऐसे आदमी की गरदन फौरन धड़ से अलग कर देनी चाहिए।"

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरा भी यही विचार है। ऐसे आदमी को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए। उसके साथ किसी तरह की दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।"

तीसरा लड़का चुप बैठा रहा।

"क्या बात है, मेरे बेटे?" राजा ने उससे पूछा, "तुम कुछ नहीं बोले, तुम्हारा क्या विचार है?"

"महाराज," छोटे राजकुमार ने कहा, "यह सच है कि ऐसे कुसूर की सज़ा मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। लेकिन सज़ा देने से पहले यह बात साफ-साफ और पूरी तरह से साबित हो जानी चाहिए कि वह सचमुच ही दोषी है।"

"यानी, तुम्हारे विचार से ऐसा न किया गया तो निर्दोष आदमी भी मारा जा सकता है।" राजा ने पूछा।

"हाँ,"राजकुमार ने जवाब दिया, "ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

ऐसा कहकर राजकुमार ने यह कहानी सुनाई।

विदर्भ देश के राजा के पास एक अनोखा तोता था। उस तोते का नाम हिमशुक था। वह महल में पालतू पक्षी की तरह रहता था। हिमशुक बड़ा चतुर था। वह कई भाषाओं में बात कर सकता था। बुद्धिमान इतना था कि अक्सर राजा भी महत्त्वपूर्ण मामलों में उसकी राय लिया करता था।

हिमशुक पिंजरे में नहीं रहता था। वह अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से घूमता रहता था। एक

दिन सवेरे वह महल से उड़कर जंगल की ओर निकल गया। वहाँ संयोग से उसकी भेंट अपने पिता से हो गई।

"तुमसे मिलकर मैं कितना प्रसन्न हुआ हूँ," उसके पिता ने कहा, " तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर इतना ही प्रसन्न होगी। क्या तुम दो-चार दिन के लिए घर नहीं आ सकते?"

"घर आने की तो मुझे भी बड़ी इच्छा थी," हिमशुक ने कहा, "मगर इसके लिए मुझे राजा से अनुमति लेनी पड़ेगी।"

महल वापस जाकर हिमशुक ने राजा से घर जाने की आज्ञा माँगी। शुरू में तो राजा उसे जाने देने के लिए राजी नहीं हुआ। वह हिमशुक को बहुत मानता था और अपने से अलग नहीं करना चाहता था। पर अंत में वह मान गया। उसने हिमशुक को घर जाने की अनुमति दे ही दी।

" तुम घर जाकर अपने माँ-बाप के साथ कुछ दिन बिता सकते हो," राजा ने हिमशुक से कहा, "लेकिन जितनी जल्दी हो सके लौट आना।"

"बहुत अच्छा महाराज," हिमशुक ने कहा, "मैं पंद्रह दिन बाद वापस आ जाऊँगा।" इसके बाद हिमशुक अपने पिता के पास गया और वे दोनों, साथ-साथ उड़ते हुए, घर की ओर रवाना हुए। इतने वर्ष बाद अपने प्यारे बेटे हिमशुक को देखकर उसकी माँ बहुत खुश हुई।

एक पखवाड़े तक अपने माँ-बाप के साथ रहने के बाद हिमशुक ने उनसे कहा, "मेरे ये दिन अपने प्रियजनों के साथ बड़े ही सुख से बीते हैं, मगर अब मुझे जाना होगा। राजा मेरी राह देख रहे होंगे।"

हिमशुक के माँ-बाप उसके इतनी जल्दी जाने की बात सुनकर उदास हो गए। परंतु वे उसे रोक नहीं सके। हिमशुक ने राजा से वादा किया था कि वह पंद्रह दिन के बाद लौट आएगा।

"हम राजा के लिए कोई उपहार भिजवाना चाहते हैं," हिमशुक के पिता ने कहा, "लेकिन समझ में नहीं आता कि कौन-सी चीज भिजवाएँ।"

हिमशुक के माता और पिता दोनों ही इस बात पर विचार करने लगे कि राजा को देने लायक उपहार क्या हो सकता है? कुछ देर सोचने के बाद हिमशुक के पिता ने कहा, "अहा, मैं समझ गया कि राजा के लिए सबसे अच्छा उपहार क्या हो सकता है। यहीं से दूर एक पहाड़ी पर अमरफल का पेड़ है। जो कोई उसका फल खा लेता है वह कभी नहीं मरता और हमेशा जवान रहता है। मैं वहाँ जाकर एक फल तोड़ लाता हूँ। तुम वह फल राजा को दे देना।"

फल मिलते ही हिमशुक राजा के महल की ओर रवाना हुआ। शाम हो चली थी। थोड़ी ही देर में सूरज डूब गया और चारों ओर रात का घना अंधकार छा गया। हिमशुक ने किसी पेड़ की डाल पर बैठकर रात काटने का इरादा किया। मगर इससे पहले वह उस कीमती फल को किसी सुरक्षित स्थान में रखना

चाहता था। किस्मत से उसे एक ऐसा पेड़ मिल गया जिसके तने में एक खोखला छेद था। उसने उस छेद में अमरफल रख दिया और पास ही एक डाल पर बैठ सुस्ताने लगा। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई।

पेड़ का वह खोखला छेद एक जहरीले साँप का घर था। जब साँप लौटकर आया तो उसकी नजर चमकते हुए अमरफल पर पड़ी। उसने सोचा वह शायद कोई खाने की चीज है। साँप ने फल पर दाँत गड़ा दिए। मगर उसे फल का स्वाद अच्छा नहीं लगा। उसने उसे वैसा ही छोड़ दिया। लेकिन जिस समय साँप ने फल पर दाँत गड़ाए, उस समय उसके दाँतों से कुछ जहर भी निकल आया। जहर से फल भी जहरीला हो गया।

दूसरे दिन सवेरे हिमशुक ने फल उठाया और अपनी यात्रा पर उड़ चला। राजमहल पहुँचकर उसने राजा से मुलाकात की और अपने माँ-बाप की ओर से अमरफल भेंट किया।

उस जादुई फल को पाकर राजा इतना खुश हुआ कि उसने फल खाने से पहले एक दरबार करने का निश्चय किया। दरबार में उसके मंत्री और राजपरिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। राजा ने सबके सामने फल उठाया, पर जैसे ही खाने के लिए तैयार हुआ कि मुख्यमंत्री ने टोक दिया।

"महाराज, जरा ठहरिए", मुख्यमंत्री ने कहा, "बुद्धिमानी की बात यह होगी कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाए। यदि जानवर को कुछ न हो तो आप भी इसे खा सकते हैं।"

"सुझाव बहुत अच्छा है," राजा ने कहा। उसने फल काटा और एक छोटा सा टुकड़ा एक कौए की ओर फेंक दिया।

कौए ने फल खाया और खाते ही मर गया।

"महाराज," मंत्री ने कहा, "आज आप बाल-बाल बचे हैं। फल जहरीला है। यह अमरफल नहीं मृत्युफल है। इससे यह भी जाहिर है कि फल खिलाकर हिमशुक आपको मारना चाहता था।"

राजा गुस्से के मारे आगबबूला हो गया। उसने लपककर हिमशुक को पकड़ा और बिना

सोचे-समझे उसकी गरदन उड़ा दी। इसके बाद उसने हुक्म दिया कि उस जहरीले फल को नगर के बाहर एक गहरे गड्ढे में दबा दिया जाए।

फल ज़मीन में दफ़ना दिया गया। मगर कुछ ही समय बाद उसका बीज अंकुरित होकर बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते पूरा पेड़ बन गया। कुछ समय बाद उस पेड़ में बड़े ही सुंदर, चमकीले, सुनहरे फल लग गए।

जब राजा ने उस विचित्र पेड़ के बारे में सुना तो कहा, "वे फल जहरीले हैं, मौत के फल हैं।"

राजा ने हुक्म दिया कि उस पेड़ के चारों ओर एक बाड़ बना दी जाए और हर समय पेड़ की रखवाली की जाए ताकि कोई भी उन जहरीले फलों को न खा सके। मृत्युफल की खबर सारे शहर में फैल गई। जनता को उस पेड़ के पास फटकने में भी डर लगने लगा।

उन्हीं दिनों उस शहर में एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनका कोई मददगार भी नहीं था। वे किसी तरह दूसरों की मेहरबानी पर गुजर कर रहे थे। बुढ़ापे के मारे वे इतने कमजोर और असहाय हो गए थे कि भीख माँगने भी नहीं जा सकते थे। अकसर फाके करते रहने से उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि अब जीना बेकार है। दोनों ने सोचा कि ऐसी जिन्दगी के बजाय मर जाना कहीं अच्छा है। मरने के लिए सबसे अच्छा यही था कि पेड़ के जहरीले फल खा लिए जाएँ।

एक रात बूढ़ा चुपके से पेड़ के पास गया और पहरेदार की नजर बचाकर बाड़े के अंदर घुस गया। उसने पेड़ से दो फल तोड़े और उन्हें लेकर सीधे घर पहुँचा। घर पहुँचकर उसने और उसकी बुढ़िया दोनों ने एक-एक फल खा लिया। इसके बाद वे तुरंत मरने की आशा से बिस्तर पर लेट गए।

लेकिन दूसरे दिन सवेरे रोज की तरह उनकी आँखें फिर खुल गईं। अपने आपको जिंदा पाकर उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ। इससे भी बड़ा ताज्जुब तो यह था कि वे दोनों जवान हो गए थे। उनकी पहले की चुस्ती और ताकत भी लौट आई थी।

राजा ने यह अनोखी बात सुनी तो वह भी उन दोनों को देखने गया। उन्हें सचमुच ही जवान देखकर वह दंग रह गया। अब जाकर उसकी समझ में आया कि हिमशुक जो फल लाया था वह असली अमरफल था। उसे अपनी जल्दबाजी पर, अपने

प्यारे तोते को बेकुसूर इस तरह मार देने पर बेहद अफसोस होने लगा।

"इसीलिए मैं कहता हूँ," छोटे राजकुमार ने आगे कहा, "किसी को सजा देने से पहले इस बात का पूरा-पूरा पता लगा लेना जरूरी है कि वह सचमुच अपराधी है या नहीं।"

राजा अपने तीसरे लड़के की बातें सुनकर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे युवराज यानि अपना उत्तराधिकारी बना दिया।

-शंकर

शब्दार्थ

फाका – उपवास **विश्वासघाती** – विश्वास को तोड़ने वाला **मृत्युदंड** – मौत की सजा
अनुमति – आज्ञा, स्वीकति **पखवाड़ा** – पंद्रह दिनों का कालखंड **असहाय** – लाचार
उत्तराधिकारी– किसी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का हकदार

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. अवध नरेश राजकुमारों की परीक्षा क्यों लेना चाहते थे?
2. हिमशुक तो राजा के लिए भेंट लाया था लेकिन वही भेंट उसे महँगी पड़ी, कैसे?
3. राजा ने अपने तीसरे बेटे को ही युवराज घोषित क्यों किया?
4. **निम्नलिखित वाक्यांश किसने, किससे कहे-**

(क) तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर इतनी ही प्रसन्न होगी।

(ख) मैं पन्द्रह दिन बाद वापस आ जाऊँगा।

(ग) बुद्धिमानी की बात यह होगी कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाए।

(घ) किसी को सज़ा देने से पहले इस बात का पूरा-पूरा पता लगा लेना जरूरी है कि वह सचमुच अपराधी है या नहीं।

5. **निम्नलिखित प्रश्नों के चार विकल्प दिए गए हैं, जिनमें एक विकल्प सही है। सही विकल्प के सामने (☒) का निशान लगाइए**

(क) हिमशुक एक नाम है-

(i) जानवर का ( ) (ii) आदमी का ( )

(iii) पक्षी का ( ) (iv) जंगल का ( )

(ख) किस देश के राजा के पास अनोखा तोता था?

(i) अवध ( ) (ii) विदर्भ ( )

(iii) गंधार ( ) (iv) कोसल ( )

(ग) हिमशुक रात में कहाँ ठहरा था?

(i) पेड़ पर ( ) (ii) पहाड़ पर ( )

(iii) महल की छत पर ( ) (iv) गुंबद पर ( )

(घ) जहरीले फल को राजा ने क्या किया?

(i) नदी में फेंक दिया ( ) (ii) जलवा दिया ( )

(iii) स्वयं खा गया ( ) (iv) गड्ढे में दबवा दिया ( )

पाठ से आगे

1. सज़ा देने से पहले राजा को क्या करना चाहिए था?
2. कल्पना कीजिए कि अमरफल के मृत्युफल में बदलने की सच्चाई का पता राजा के तीसरे बेटे को कैसे चला होगा?
3. कल्पना कीजिए कि आप हिमशुक हैं और राजा आप पर वार करने के लिए हाथ उठाता है। तब आप क्या करेंगे?

चीनी का ठोंगा

मोहन अपनी पढ़ाई में मशगूल था। तभी माँ ने आवाज़ लगाई– अरे मोहन, जरा बगल की दुकान से आधा किलो चीनी ले आओ। जब चीनी लेकर वापस लौट रहा था, तो उसके दोस्त खेलते मिल गए। चीनी का ठोंगा वहीं पास में रखकर वह खेलने में मग्न हो गया। अचानक उसे ध्यान आया कि माँ ने तो चीनी लाने को कहा था। वह जल्दी से वहाँ गया, जहाँ उसने चीनी रखी थी। लेकिन वह घबरा गया। चीनी का ठोंगा नीचे से गीला हो गया था, क्योंकि वहाँ की मिट्टी गीली थी। किसी तरह से वह चीनी लेकर घर पहुँचा। चीनी की हालत देखकर उसकी माँ ने उसे डाँटा। डाँट सुनकर मोहन रूठ गया।

(क) क्या माँ का मोहन को डाँटना उचित था?

(ख) क्या मोहन का रूठना उचित था ?

व्याकरण

1. पठित पाठ में से पाँच ऐसे वाक्य छाँटकर लिखिए जिनमें 'ने' का प्रयोग हुआ है।

   उदाहरण- राजकुमार **ने** यह कहानी सुनाई

2. **निम्नलिखित युग्म शब्दों से वाक्य बनाइए-**

   साथ-साथ

   दो-चार

   एक-एक

   पूरा-पूरा

   बढ़ते-बढ़ते

3. **रिक्त स्थान को भरिए-**

   मृत्युदंड, कृतज्ञ, विश्वासघाती, उत्तराधिकारी, राजकुमार, कृतघ्न

   (i) जो किसी के विश्वास को ठेस पहुँचाए.....

   (ii) राजा का लड़का.....

   (iii) किसी की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पाने का हकदार.....

   (iv) मौत की सज़ा.....

   (v) किए गए उपकारों को नहीं मानने वाला.....

   (vi) किए गए उपकारों को मानने वाला.....

गतिविधि

1. **नीचे की वर्ग-पहेली में बीस विशेषण हैं, उन्हें ढूँढ़कर लिखिए। यह बाएँ से दाएँ, ऊपर से नीचे या आड़े-तिरछे भी हो सकते हैं।**

वि	श्वा	स	घा	ती	ग	म
घ	च	बू	वि	को	री	ह
ना	तु	ढा	खा	चि	ब	त्व
सु	र	क्षि	त	ली	त्र	पू
छो	ब	अ	नो	ख	की	र्ण
टा	ड़े	च्छा	नि	प्या	म	ए
बु	द्धि	मा	न	रे	ती	क

ज्यादा किसे मिलें?

एक बार की बात है! किसी गाँव में दो अज़नबी घूमते-घामते पहुँचे। शाम हो गई थी। वे रात उसी गाँव में बिताना चाहते थे। वे मुखिया के पास गए और उनसे रात को गाँव में ठहर जाने की अनुमति माँगी। मुखिया ने दोनों को गाँव की अतिथिशाला में ठहरने की अनुमति दे दी। मुखिया ने कहा, "रात में आपको खाना भी मिलेगा। आप खाकर आराम से सोइए। मगर हमारे गाँव का एक नियम है....।"

अज़नबियों ने पूछा, "कैसा नियम?" तो मुखिया ने कहा, "नियम यह है कि कोई अतिथि सोते हुए खर्राटे नहीं ले सकता। खर्राटे लिए तो हम उसे मार डालेंगे।"

अज़नबियों ने शर्त मान ली और वे अतिथिशाला में चले गए। रात को खाना खाकर दोनों सो गए। थोड़ी ही देर में एक अज़नबी खर्राटे लेने लगा। इससे दूसरे की नींद खुल गई। उसने सोचा गाँव वाले इसके खर्राटे सुनकर आते ही होंगे। अब तो जान गई। इस संकट से बचने का उसे एक विचार आया और वह जोर-जोर से गाने लगा। गाने की आवाज़ सुनकर मुखिया वहाँ पहुँच गया। धीरे-धीरे गाँव वाले भी पहुँच गए। सभी मिलकर गाने लगे। वे रात भर गाते रहे। दूसरे अज़नबी के खर्राटे कोई नहीं सुन पाया।

सुबह उठकर जब दोनों जाने लगे तो मुखिया ने उन्हें सिक्कों से भरा एक थैला दिया और कहा, " रात हम लोगों ने काफी अच्छा समय बिताया इसलिए यह तोहफा आपके लिए है।"

थैला लेकर दोनों विदा हुए। गाँव से बाहर निकलते ही दोनों झगड़ने लगे। दोनों अपने लिए ज्यादा सिक्कों की माँग कर रहे थे। दूसरे का कहना था, "मैंने गाना गाकर तुम्हारी जान बचाई इसलिए ज्यादा सिक्के मैं लूँगा।" और पहला तर्क दे रहा था, " अगर मैं खर्राटे नहीं लेता तो तुम्हें गाने का मौका ही नहीं मिलता। इसलिए ज्यादा सिक्के मैं लूँगा।"

दोनों इस बात पर देर तक लड़ते रहे। आखिर तक वे किसी नतीजे पर नहीं पहुँच पाए। क्या आप बता सकते हैं कि ज्यादा सिक्कों का हकदार कौन है?

(बाल विज्ञान पत्रिका 'चकमक' जनवरी, 2009 से साभार)